IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राचीन भारतीय सौन्दर्य प्रसाधन विज्ञान का सामाजिक, आर्थिक और वैश्विक प्रभाव

(प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रन्थों में प्राप्त जड़ी बूटियों के प्रयोग के संदर्भ में)

डॉ0नीलम
असिस्टेंट प्रोफेसर
कला एवं मानविकी, एपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान। (पिनकोड–302020)

Abstract: सभ्यता और संस्कृति को पढ़ने और पढ़ने का सतत् कार्य विज्ञान और तकनीकी के बिना अधूरा ही रहा है। प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वहां मानव जीवन आधुनिक सुख–सुविधाओं के साथ तभी जी सका जब विज्ञान के आविष्कारों ने जन्म लिया। इसलिए, इतिहास, सभ्यता और संस्कृति का तकनीकी और ईजाद की, उपकरणों का संबंध सदियों पुराना रहा है। भारतीय प्राचीन संस्कृतियों में सामाजिक जीवन का जब विश्लेषण किया जाता है तो मानव जीवन की रुचि सौंदर्य प्रसाधनों पर अधिक दिखाई देती है। चाहें पुरुष हो या महिला दोनों ने इन सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग कर स्वयं को संवारने और सुन्दर दिखने के भरसक चाह को पूरा किया है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में कॉस्मेटिक उत्पादकों के लिए विभिन्न प्राकृतिक पदार्थो का उपयोग करना एक समृद्व परम्परा थी। यहां प्राचीन भारत में सौंदर्य प्रसाधनों और उनके उपयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार है–1. मेंहदी (मेहंदी)2. चंदन3. हल्दी (हल्दी)4. काजल (कोहल)5. नारियल तेल6. आंवला (इंडियन गूसबेरी)7. गुलाब जल।
की–वर्ड 1.काजल 2.गुलाब जल 3.सभ्यता काल 4.संस्कृति

Index Terms - Component, formatting, style, styling, insert.

I. INTRODUCTION

सभ्यता और संस्कृति को पढ़ने और पढ़ने का सतत् कार्य विज्ञान और तकनीकी के बिना अधूरा ही रहा है। प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वहां मानव जीवन आधुनिक सुख–सुविधाओं के साथ तभी जी सका जब विज्ञान के आविष्कारों ने जन्म लिया। इसलिए, इतिहास, सभ्यता और संस्कृति का तकनीकी और ईजाद की, उपकरणों का संबंध सदियों पुराना रहा है। विश्व की प्रसिद्व सभ्यताओं में रोम, मिस्त्र, यूनान, मैसोपोटामिया, सिन्धु घाटी सभ्यता और माया सभ्यता, शामिल है, इन सभ्यताओं में विकसित हुई स्थापत्य कला, चित्रकला, सौंदर्य प्रसाधन सामग्री विज्ञान, आयुद्व उपकरणों से लेकर वेशभूषा–साज सज्जा तक तकनीकी की देन रही है। इन सभ्यताओं में आधुनिकता की जो झलक दिखाई देती है वह वैज्ञानिक प्रगति में खोजी गई तकनीकी उपकर.ाों के कारण ही है जिससे कि इन सभ्यताओं में जीवन जी रहे स्थानीय लोगों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया।

भारतीय प्राचीन संस्कृतियों में सामाजिक जीवन का जब विश्लेषण किया जाता है तो मानव जीवन की रुचि सौंदर्य प्रसाधनों पर अधिक दिखाई देती है। चाहें पुरुष हो या महिला दोनों ने इन सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग कर स्वयं को संवारने और सुन्दर दिखने के भरसक चाह को पूरा किया है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में

कॉस्मेटिक उत्पादकों के लिए विभिन्न प्राकृतिक पदार्थो का उपयोग करना एक समृद्व परम्परा थी। यहां प्राचीन भारत में सौंदर्य प्रसाधनों और उनके उपयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

1. मेंहदी (मेहंदी): मेंहदी का उपयोग व्यापक रूप से शारीरिक कला और बालों को रंगने के लिए किया जाता था। इसे त्योहारों और शादियों के दौरान जटिल डिजाइनों में हाथों और पैरों पर लगाया जाता था।

2. चंदनः चंदन के पेस्ट का उपयोग प्राकृतिक मॉइस्चराइजर और त्वचा शीतलक के रूप में किया जाता था।

3. हल्दी (हल्दी): भारत में हल्दी का उपयोग इसके औषधीय और कॉस्मेटिक गुणों के लिए सदियों से किया जाता रहा है। इसके एंटी–इंफ्लेमेटरी और एंटीसेप्टिक गुणों के कारण इसे चेहरे के रंग को निखारने, मुंहासों को कम करने और घावों को ठीक करने के लिए फेस मास्क के रूप में लगाया जाता था।

4. काजल (कोहल): कालिख, घी और कपूर से बना काजल, आंखों के मेकअप के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

5. नारियल तेलः त्वचा की देखभाल और बालों की देखभाल के लिए नारियल तेल का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता था। यह एक प्राकृतिक मॉइस्चराइजर, मेकअप रिमूवर और हेयर कंडीशनर के रूप में काम करता है, जो स्वस्थ त्वचा और चमकदार बालों को बढ़ावा देता है।

6. आंवला (इंडियन गूसबेरी): बालों की देखभाल के लिए आंवला का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता था।

7. गुलाब जलः गुलाब जल का उपयोग प्राकृतिक टोनर और खुशबू के रूप में किया जाता था। इसे त्वचा को ताजा करने, छिद्रों को कसने और एक सुखद खुशबू छोड़ने के लिए चेहरे पर छिड़का गया था।

इन प्राकृतिक सौंदर्य प्रसाधनों ने न केवल सौंदर्य संबंधी उद्देश्यों को पूरा किया, बल्कि चिकित्सीय लाभ भी दिए, जिससे प्राचीन भारतीय सभ्यता में सौंदर्य देखभाल के समग्र दृष्टिकोण में योगदान मिला।

सभ्यता और संस्कृति को पढ़ने और पढ़ने का सतत् कार्य विज्ञान और तकनीकी के बिना अधूरा ही रहा है। प्राचीन सभ्यताओं का इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वहां मानव जीवन आधुनिक सुख–सुविधाओं के साथ तभी जी सका जब विज्ञान के आविष्कारों ने जन्म लिया। इसलिए, इतिहास, सभ्यता और संस्कृति का तकनीकी और ईजाद की, उपकरणों का संबंध सदियों पुराना रहा है। विश्व की प्रसिद्व सभ्यताओं में रोम, मिस्त्र, यूनान, मैसोपोटामिया, सिन्धु घाटी सभ्यता और माया सभ्यता, शामिल है, इन सभ्यताओं में विकसित हुई स्थापत्य कला, चित्रकला, सौंदर्य प्रसाधन सामग्री विज्ञान, आयुद्व उपकरणों से लेकर वेशभूषा–साज सज्जा तक तकनीकी की देन रही है। इन सभ्यताओं में आधुनिकता की जो झलक दिखाई देती है वह वैज्ञानिक प्रगति में खोजी गई तकनीकी उपकर.ाों के कारण ही है जिससे कि इन सभ्यताओं में जीवन जी रहे स्थानीय लोगों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन को प्रभावित किया।

भारतीय प्राचीन संस्कृतियों में सामाजिक जीवन का जब विश्लेषण किया जाता है तो मानव जीवन की रुचि सौंदर्य प्रसाधनों पर अधिक दिखाई देती है। चाहें पुरुष हो या महिला दोनों ने इन सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग कर स्वयं को संवारने और सुन्दर दिखने के भरसक चाह को पूरा किया है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में कॉस्मेटिक उत्पादकों के लिए विभिन्न प्राकृतिक पदार्थो का उपयोग करना एक समृद्व परम्परा थी। कॉस्मेटिक उत्पादों के रुप में भारतीय जड़ी–बूटियों का सौंदर्य और त्वचा–स्वास्थ्य में उपयोग हजारों साल पुराना है। आयुर्वेद, जो 5000 वर्षो से भी अधिक पुराना चिकित्सा विज्ञान है, में त्वचा की देखभाल के लिए कई जड़ी–बूटियों का उल्लेख मिलता है। यहां प्राचीन भारत में सौंदर्य प्रसाधनों और उनके उपयोग के कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

1. मेंहदी (मेहंदी): हालांकि मिस्त्र की ममियों फिरौन के बालों और नाखूनों में मेहंदी के अंश मिले है जिससे पता चलता है कि 1200 ई पू में वहां मेहंदी को श्रृंगार के रुप में उपयोग में लिया जाता था, लेकिन वहीं दूसरी ओर जब भारत में मेहंदी के पौधे के ठंडक देने के गुणों की खोज हुई उस समय इसे भारतीय रेगिस्तानी इलाकों में त्वचा पर मेंहदी शरीर के तापमान को ठंडा करने के लिए लगाई जाने लगी। धीरे धीरे इसके गुणों के साथ–साथ सौंन्दर्य प्रसाधन के रुप में इसका उपयोग चलन में आ गया। अब भारतीय समाज में मेहंदी को शुभता के रुप में उपयोग किया जाने जगा। कोई शादी इसके बिना अधूरी मानी जाने लगी जो कि वर्तमान तक एक जरुरी श्रृंगार बन चुकी है। इसे त्योहारों और शादियों के दौरान जटिल डिजाइनों में हाथों और पैरों पर लगाया जाता था। सभी धमों के लोग इसे बिना भेदभाव के अपनी संस्कृति में अपना चुके है। जो कि प्राचीन काल में खोजी गई एक जड़ी थी आज भारतीय समाज में सौभाग्य और शुभता का परिचय बन चुकी है।

2. चंदनः चंदन के पेस्ट का उपयोग प्राकृतिक मॉइस्चराइजर और त्वचा शीतलक के रूप में किया जाता था। चंदन की लकड़ी का उपयोग और महत्व प्राचीन काल से चला आ रहा है। सबसे पहले इसकी खोज और उपयोग भारत में हुआ था। अगर ऐतिहासिक दृष्टि से देखें, तो ''संस्कृत ग्रंथों'' और ''वैदिक साहित्य'' में चंदन का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद और अन्य वैदिक ग्रंथों में चंदन के औषधीय और धार्मिक उपयोगों का ज़िक्र

किया गया है। इसके अलावा, प्राचीन ''भारतीय आयुर्वेदाचार्यों'' जैसे चरक और सुश्रुत ने भी चंदन के औषधीय गुणों को विस्तार से बताया है।
अगर खोज की बात करें, तो चंदन के प्राकृतिक आवास ''दक्षिण भारत'' (विशेष रूप से कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल) में पाए जाते हैं। कर्नाटक में मैसूर का चंदन विश्व प्रसिद्ध है। संक्षेप में, चंदन की लकड़ी की खोज का श्रेय भारत को ही जाता है, और प्राचीन वैदिक काल से इसे एक महत्वपूर्ण सुगंधित और औषधीय लकड़ी के रूप में पहचाना जाता रहा है। जिसे शरीर पर लेप और तिलक लगाने में प्रयोग किया जाता रहा है और आधुनिक काल में भी चेहरे की चमक को बढ़ाने के लिए इसके पाउडर और तेल को फेसपेक के रूप में प्रयोग किया जाता है।
3. हल्दी (हल्दी): भारत में हल्दी का उपयोग इसके औषधीय और कॉस्मेटिक गुणों के लिए सदियों से किया जाता रहा है। इसके एंटी–इंफ्लेमेटरी और एंटीसेप्टिक गुणों के कारण इसे चेहरे के रंग को निखारने, मुंहासों को कम करने और घावों को ठीक करने के लिए फेस मास्क के रूप में लगाया जाता था। हल्दी (ज्नतउमतपब) की खोज और उपयोग का सबसे पुराना प्रमाण भारत में मिलता है। वैदिक काल से ही इसका उपयोग औषधीय, धार्मिक और पाक संबंधी उद्देश्यों के लिए किया जाता रहा है। ऋग्वेद में औषधीय पौधों और जड़ी–बूटियों के गुणों का उल्लेख मिलता है, जिनमें हल्दी जैसी वनस्पतियों के औषधीय और सौंदर्य संबंधी उपयोग भी शामिल हैं। हालांकि, ऋग्वेद में सीधे "हल्दी" शब्द का उल्लेख स्पष्ट रूप से नहीं मिलता, लेकिन उसमें "ओषधि सूक्त" (ऋग्वेद 10.97) में कई औषधीय पौधों की महिमा गाई गई है।
ओषधि सूक्त (ऋग्वेद 10.97) और औषधीय वनस्पतियां–ऋग्वेद 10.97 में औषधियों की प्रशंसा की गई है:

- इसमें 125 से अधिक औषधीय पौधों की शक्तियों का वर्णन किया गया है।
- कहा गया है कि ये वनस्पतियां रोगों को नष्ट करती हैं और शरीर को शुद्ध कर स्वास्थ्य प्रदान करती हैं।
- इसे आयुर्वेद के मूल स्रोतों में से एक माना जाता है।

महत्वपूर्ण ऋचाएं:

"याः ओषधयः पूर्वा जाता देवेभ्यः सप्तहोतृभ्यः।
न ता नशन्ति नावधीः॥"
(ऋग्वेद 10.97.1)
अर्थ: वे औषधियां, जो प्राचीन काल से चली आ रही हैं और देवताओं के लिए भी उपयोगी हैं, वे अमर हैं और किसी का अहित नहीं करतीं।
"ओषधयः सं वहन्तु शं यसः शं यशसः।
शं राज्ञे शं रक्षसे शमिन्द्राय शमग्नये॥"
(ऋग्वेद 10.97.7)
अर्थ: औषधियां हमें स्वास्थ्य, शक्ति और समृद्धि दें, राजा और रक्षा करने वालों को शक्ति दें, इंद्र और अग्नि को भी इनका लाभ मिले।
हल्दी (हरिद्रा) का उपयोग और ऋग्वेद से संबंध

- हल्दी को संस्कृत में **"हरिद्रा"** कहा जाता है।
- बाद में अथर्ववेद में हल्दी जैसे पीले औषधीय पौधों का उल्लेख मिलता है, जो त्वचा रोगों और बुरी ऊर्जा से बचाव के लिए उपयोगी बताए गए हैं।
- आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में हल्दी के त्वचा संबंधी फायदों का स्पष्ट वर्णन मिलता है।

4. काजल (कोहल): कालिख, घी और कपूर से बना काजल, आंखों के मेकअप के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
5. नारियल तेल: त्वचा की देखभाल और बालों की देखभाल के लिए नारियल तेल का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता था। यह एक प्राकृतिक मॉइस्चराइजर, मेकअप रिमूवर और हेयर कंडीशनर के रूप में काम करता है, जो स्वस्थ त्वचा और चमकदार बालों को बढ़ावा देता है।
6. **आंवला** (इंडियन गूसबेरी): बालों की देखभाल के लिए आंवला का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता था। आंवले का इतिहास बहुत पुराना है और यह भारत, पाकिस्तान, और बांग्लादेश जैसे देशों में पाया जाता है. आंवले को धार्मिक मान्यताओं में बहुत महत्व दिया गया है. आंवले के बारे में कई पौराणिक कथाएं भी प्रचलित हैं.

आंवले के इतिहास के बारे में कुछ रोचक बातें:

आंवले को 5,000 साल पहले से ही पूजनीय माना जाता है। इसे धातृ वृक्ष, आदिरोह या आदि वृक्ष भी कहते हैं। भारतीय धार्मिक मान्यता है कि आंवले की उत्पत्ति ब्रम्हा जी के आंसू से हुई थी। इसको शिवा (कल्याणकारी), वयस्था (अवस्था को बनाए रखनेवाला) तथा धात्री (माता के समान रक्षा करनेवाला) कहा गया है। आंवले में विटामिन सी की मात्रा बहुत ज़्यादा होती है जो कि आंखों, त्वचा और बालों के लिए बहुत लाभकारी होती है। इसलिए प्राचीन काल से ही इसके मुरब्बे अचार बनाकर खाये जाते रहे है।

7.नीम नीम के पेड़ का इतिहास बहुत पुराना है. इसका इस्तेमाल प्राचीन काल से ही बीमारियों के इलाज और खाद के रूप में किया जा रहा है. नीम के पेड़ को संयुक्त राष्ट्र ने '21वीं सदी का पेड़' घोषित किया है। नीम मूल रुप से भारत में पाया जाने वाला पेड़ है जो कि प्राचीन काल से ही एंटी–बैक्टीरियल, एंटी–इन्फ़्लेमेटरी, एंटीफ़ंगल, एंटीवायरल और एंटीऑक्सीडेंट जैसे गुणों के कारण उपयोग में लाया जाता रहा है। जब भी किसी को चिकनपॉक्स जैसी गंभीर त्वचा संक्रामक रोग होता था भारतीय वैद्य इसके बिस्तर पर सुलाने और ठीक होने के पश्चात नीम को पानी में उबालकर नहलाने पर जोर देते थे। क्योंकि वो इसके एंटीफंगल गुण से भली भांति परिचित थे। आयुर्वेद में नीम के पेड़ की छाल, पत्ति, कोंपल को अलग अलग तरीके से खाने के फायदे बताये है।

भारतीय सभ्यता जैसे जैसे आगे बढ़ी वैसे वैसे समाज में सुसंस्कृत होने की चाहत भी बढ़ने लगी। इसलिए मानव जाति ने अच्छे और सुन्दर रंग बिरंगे परिधानों के साथ ही चेहरे और बालों को सुन्दर बनाने के लिए अपने आस पास पेड़ पौधों में विकल्प ढूढने शुरु कर दिये थे। मेंहदी, आंवला, उबटन उसी के परिणाम है। सवाल ये आता है कि क्या भारत में पाश्चात्य देशों के मुकाबले पहले इस कॉस्मेटिक साइंस को विकसित किया, या उसके साथ–साथ। इसके लिए हमने अपने प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन किया जिसमें आयुर्वेद और चारो वेदों के अध्ययन के उपरान्त हमें कुछ श्लोक मिले जिसमें इन जड़ी बूटियों के इस्तेमाल और फायदों की जानकारी मिलती है। भारतीय जड़ी–बूटियों का उपयोग प्राचीन काल से लेकर आज तक होता आ रहा है। आधुनिक विज्ञान ने भी इनके फायदों को प्रमाणित किया है, जिससे आयुर्वेदिक ब्यूटी प्रोडक्ट्स की मांग भारत और विदेशों में बढ़ी है।

भारतीय जड़ी–बूटियों के त्वचा पर उपयोग का इतिहास

1. वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व – 500 ईसा पूर्व)
   - ऋग्वेद और अथर्ववेद में सौंदर्य उपचार के लिए कई वनस्पतियों का वर्णन है।
   - हल्दी, चंदन और एलोवेरा का उपयोग त्वचा की देखभाल के लिए होता था।
2. आयुर्वेदिक काल (500 ईसा पूर्व – वर्तमान)
   - चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में त्वचा की देखभाल के लिए विशेष जड़ी–बूटियों का उल्लेख है।
   - नीम, मंजिष्ठा, अश्वगंधा और केसर जैसी जड़ी–बूटियों को त्वचा रोगों और सौंदर्य निखारने के लिए उपयोग किया जाता था।
3. मुगल और राजपूत काल (12वीं – 18वीं शताब्दी)
   - चंदन, गुलाब जल और उबटन का उपयोग शाही परिवारों में त्वचा को निखारने के लिए किया जाता था।
   - केसर और दूध से बने फेस पैक का चलन बढ़ा।
4. आधुनिक अनुसंधान (20वीं शताब्दी – वर्तमान)
   - वैज्ञानिक शोधों से पुष्टि हुई कि हल्दी में एंटी–इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं और नीम एंटी–बैक्टीरियल होता है।
   - भारतीय ब्रांड्स ने हर्बल ब्यूटी प्रोडक्ट्स को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाया।

भारतीय हर्बल उत्पादों को कब मिला आधुनिक वैज्ञानिक प्रमाण—
औद्योगिक क्रांति के बाद वैज्ञानिक अध्ययन बढ़े, लेकिन 20वीं शताब्दी में हर्ब्स के त्वचा पर प्रभाव को वैज्ञानिक रूप से सिद्ध किया गया।

❖ 1880े — 1920े:

- फार्माकोलॉजी के अध्ययन बढ़े, और वैज्ञानिकों ने प्राकृतिक यौगिकों का विश्लेषण शुरू किया। नीम, हल्दी, चंदन और एलोवेरा के एंटीसेप्टिक गुणों पर शुरुआती प्रयोग।

❖ 1950े — 1980े:

- एलोवेरा पर रिसर्च हुई, जिससे पता चला कि इसमें ॅदजप—पदसिंउउंजवतल ॅदक ीमंसपदह गुण होते हैं।
- हल्दी के करक्यूमिन (ब्नतबनउपद) तत्व पर शोध हुआ और इसे त्वचा के लिए फायदेमंद पाया गया। नीम और तुलसी के ॅदजप—इंबजमतपंस गुणों की पुष्टि हुई।

❖ 1990े — वर्तमान:

- एंटीऑक्सीडेंट्स और हर्बल स्किनकेयर पर व्यापक शोध।
- 2000 के बाद, अत्याधुनिक तकनीकों से यह साबित हुआ कि हर्ब्स त्वचा की नमी बनाए रखते हैं, झुर्रियां कम करते हैं और न्ट किरणों से बचाव करते हैं।
- 2010 के बाद, आयुर्वेदिक और हर्बल कॉस्मेटिक्स को वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर वैश्विक मान्यता मिलने लगी।

1. आयुर्वेद और सौंदर्य विज्ञान
(क) चरक संहिता और सौंदर्य विज्ञान

- आयुर्वेद में रसायन तंत्र (त्मरनअमदंजपवद जीमतंचल) के तहत सौंदर्य बढ़ाने वाले औषधीय पौधों का उल्लेख है।
- दशविध परीक्षाएं (त्वचा, बाल, नाखून इत्यादि के स्वास्थ्य को जांचने की पद्धति)।
- कांति—वर्धक औषधियां दृ हल्दी, केसर, चंदन, एलोवेरा।

(ख) सुश्रुत संहिता में सौंदर्य चिकित्सा

- सुश्रुत को भारत का पहला कॉस्मेटिक सर्जन माना जाता है।
- त्वचा और चेहरे की देखभाल के लिए वर्णप्रसादन (ब्वउचसम•पवद म्दींदबमउमदज) औषधियों का उल्लेख।
- प्लास्टिक सर्जरी के प्राथमिक रूप जैसे नाक पुनर्निर्माण (तीपदवचसेंजल)।

2. सौंदर्य प्रसाधन और प्राकृतिक सामग्री
(क) उबटन और लेप

- विवाह और विशेष अवसरों पर उबटन लगाने की परंपरा।
- प्रमुख घटक: हल्दी, बेसन, दूध, गुलाब जल, चंदन, केसर, मुल्तानी मिट्टी।

(ख) बालों की देखभाल

- प्राकृतिक शैंपू (शिकाकाई, रीठा, आंवला) का उपयोग।
- तेल मालिश (बादाम, नारियल, तिल का तेल)।

(ग) सुगंध और इत्र विज्ञान

- भारत में इत्र और सुगंधित तेलों की परंपरा वैदिक काल से रही है।
- केवड़ा, चंपा, गुलाब, चंदन से इत्र बनाने की तकनीक।
- मुगलों ने इसे और परिष्कृत किया (खुसबूदार तेल, गुलाब जल)।

3. प्राचीन ग्रंथों में कॉस्मेटिक्स का उल्लेख

- ऋग्वेदः जड़ी–बूटियों का वर्णन, त्वचा रोगों का उपचार।
- अर्थशास्त्र (चाणक्य): सुगंध और सौंदर्य प्रसाधनों का व्यापार।
- कौटिल्य अर्थशास्त्र और नाट्यशास्त्रः नृत्य और अभिनय के लिए सौंदर्य प्रसाधनों का महत्व।

4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक अनुसंधान

- हाल के वैज्ञानिक शोधों से सिद्ध हुआ कि प्राचीन भारतीय हर्बल कॉस्मेटिक्स एंटी–ऑक्सीडेंट, एंटी–बैक्टीरियल और स्किन–फ्रेंडली थे।
- हल्दी (ब्नतबनउपद) पर 20वीं शताब्दी के शोध ने साबित किया कि यह त्वचा की सूजन को कम करता है और रंगत निखारता है।
- चंदन और एलोवेरा का उपयोग आज भी अंतरराष्ट्रीय कॉस्मेटिक इंडस्ट्री में हो रहा है।
- प्राचीन भारतीय कॉस्मेटिक विज्ञान वैज्ञानिक और प्राकृतिक था, जो आज भी प्रासंगिक है। वर्तमान में हर्बल कॉस्मेटिक्स और आयुर्वेदिक सौंदर्य उत्पादों की वैश्विक मांग बढ़ रही है। आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान ने प्राचीन भारतीय हर्बल कॉस्मेटिक्स की प्रभावशीलता को प्रमाणित किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. आयुर्वेद
2. ऋग्वेद
3. यजुर्वेद
4- Indian Women's Beauty Secrets or Traditional Cosmetology - Where Magic Meets Science (Ayurvedic, Cultural, Artistic, and Modern Medical Aspects)-Dorota KAMINSKA-JONES- Publisher: Dev Publishers And Distributors -Edition: 2025
5- Ayurvedic Technical Studies and Herbal Cosmetics of Ancient India- Publisher: B.R. Publishing Corporation-Author: K.H Krishnamurthy- Language: English